License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

उत्पत्ति 1:1–2:25

बाइबिल के पुराने नियम में उत्पत्ति पहली पुस्तक है । यूनानी भाषा में उत्पत्ति का अर्थ है शुरुआत। यह पुस्तक मानव इतिहास, पाप और उद्धार की शुरुआत के बारे मे बताती है। इसमें सृष्टि की शुरुआत का वर्णन करने वाली दो कहानियाँ भी शामिल हैं। पहली कहानी उत्पत्ति 1:1 – 2:3 में है। दूसरी कहानी उत्पत्ति 2:4–25 में है। यह दोनों कहानियाँ बताती हैं कि परमेश्वर जीवन का प्रेमी निर्माता है। वह हर उस चीज़ का निर्माता है जो मौजूद है। परमेश्वर के वचनों ने आकाश और पृथ्वी और उसमे जो कुछ है सब बनाया। भूमि ने परमेश्वर के शब्दों का पालन किया और पौधों का उत्पादन किया। परमेश्वर ने पृथ्वी की धूल से जानवरों और मनुष्यों को बनाया। आदम ने परमेश्वर द्वारा बनाए गए सभी जानवरों का नाम रखा। जब परमेश्वर हव्वा को उनके पास लाए, तो उन्होंने एक सुंदर कविता कही, और इस प्रकार यह पहला विवाह हुआ । परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आशीष और वह सब कुछ दिया जो उन्हें चाहिए था। वे अदन के बगीचे में रहते थे। परमेश्वर ने उन्हें कार्य दिया । उनका कार्य परमेश्वर की बनाई हुई चीजों की रखवाली करना था । इसका मतलब उन्हें बगीचे की देखभाल करनी थी। परमेश्वर ने उनसे कहा कि तुम वाटिका के एक वृक्ष के फल को छोड़कर सभी वृक्षो के फल खा सकते हो । उन्हे भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष से खाने की अनुमति नहीं थी। आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और उनके साथ पूरी तरह मेल बनाए रखा। वे एक-दूसरे के साथ और परमेश्वर की बनायी हर चीज के साथ भी मेल बनाए रखते थे। परमेश्वर ने अपने किए हुए सृष्टि के कार्य से सातवें दिन विश्राम लिया । इसे सब्त का दिन कहा जाता है। उन सात दिनों ने साबित किया कि सृष्टि पूरी हुई। तब परमेश्वर ने प्रसन्न होकर कहा कि इसका संसार बहुत अच्छा है।

उत्पत्ति 3:1–24

यह कहानी पृथ्वी पर पाप की शुरुआत के बारे में है। यह सर्प के रूप में बुराई के बारे में बताती है। यह शैतान के बारे में बात करने का एक तरीका था। सर्प ने आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए बहकाया, जिससे उन्होंने कुछ ऐसा करने का फैसला किया जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था और उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करना छोड़ दिया। उन्होंने अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से फल खाया और वह पहला पाप था। परिणाम स्वरूप उनको मालूम हुआ कि वे नंगे थे। तब वे डर गए और परमेश्वर से छिपने लगे। पृथ्वी पर जीवन अब वैसा नहीं रहा जैसा परमेश्वर चाहते थे। परमेश्वर, लोग और पृथ्वी के बीच अब पूर्ण शांति नहीं थी। इस से पहले परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था कि वे संतान उत्पन्न करे और भूमि पर खेती और उसकी देखभाल करे। लेकिन अब बच्चे पैदा करना दर्दनाक होगा और भूमि पर खेती करना मुश्किल होगा। लोग मर जाएंगे क्योंकि वे जीवन के पेड़ से नहीं खा सकेंगे। और सर्प हमेशा मनुष्यों का दुश्मन रहेगा। इसका मतलब यह नहीं है कि सर्प जैसे जानवर बुरे हैं लेकिन इसका मतलब है कि शैतान और बुरे आध्यात्मिक प्राणी शत्रु हैं। वे परमेश्वर और उनकी बनाई हर चीज के शत्रु हैं। पाप के कारण सारी सृष्टि को श्राप और कष्ट सहना पड़ा। लेकिन हव्वा को दिए गए परमेश्वर के वचन मे एक वादा शामिल था। एक दिन एक मनुष्य परमेश्वर के शत्रुओ को कुचल देगा। और यह तब हुआ जब यीशु पृथ्वी पर आए, मारे गए और मृतकों में से जी उठे।

उत्पत्ति 4:1–5:32

उत्पत्ति मे आदम और हव्वा की वंशावली के बारे मे बताया गया है। इसमे उनके कुछ बच्चों की भी कहानियाँ बताई गई है। उनके पुत्र कैन और हाबिल ने वह काम किया जो परमेश्वर ने मनुष्यों को करने के लिए दिया था। वे जानवरों की देखभाल और भूमि पर खेती करते थे। उनका संबंध परमेश्वर के साथ था और वे उन्हे भेंट चढ़ाते थे। लेकिन जब कैन क्रोधित और दुखी था, तो उसने खुद को पाप के अधीन कर दिया और अपने भाई हाबिल को मार डाला। यह उत्पत्ति में बताई गई पहली हत्या है। यह दर्शाता है कि पाप किस प्रकार परिवारों के बीच समस्याओ का कारण बना। कैन किसान के बजाय एक निर्माणकर्ता बन गया। कैन के कुछ वंश भेड़ -बकरियों की देखभाल करते थे, कुछ संगीतकार बन गए और अन्य धातु के औजारों से काम करते थे। यह मनुष्य द्वारा किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों कि शुरुआत को दर्शाता हैं। कैन का परपोता लेमेक दुष्ट और घमंडी था। यह आदम के पुत्र शेत के बच्चों और पोते-पोतियों से अलग था। शेत के बाद, लोगों ने परमेश्वर के नाम को पुकारना शुरू किया। इसका अर्थ है कि उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की, उसकी आराधना की और उसके पीछे चलने लगे। हनोक इसका एक उदाहरण था। उत्पत्ति में कैन के परिवार के बारे में और कुछ नहीं बताया है लेकिन यह शेत के माध्यम से आदम की वंशावली को दर्शाता है । परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिए शेत के वंश के माध्यम से अपनी योजना को पूरा किया। नूह शेत के परिवार का हिस्सा था।

उत्पत्ति 6:1–8:14

उत्पत्ति 1:31 में लेखक ने बताया है कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, उसे देखा। वे प्रसन्न थे क्योंकि वह बहुत अच्छा था। जब परमेश्वर ने मानवजाति को बनाया, तब उन्होंने उनको

पृथ्वी मे फलने-फूलने के लिए कहा। इसका मतलब था कि परमेश्वर चाहते थे कि पृथ्वी अच्छी चीजों से भरी रहे। लेकिन इसके बजाय लोग पाप के अनुसार जीवन बिताते थे। उन्होंने पृथ्वी को बुरी और हानिकारक चीजों से भर दिया। इसका एक उदाहरण महिलाओं और परमेश्वर के पुत्रों के बीच विवाह था। उत्पत्ति के लेखक बताते है कि परमेश्वर ने देखा कि सब मनुष्य पापी थे। परमेश्वर खुश नहीं थे। वह इस बारे में बहुत दुखी थे। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य की आयु को कम कर दिया। उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि जो कुछ उन्होंने बनाया था उसे नष्ट कर देंगे। लेकिन नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर की आज्ञा मानी। यही परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्यता से चलने का तरीका है। परमेश्वर नूह से बहुत प्रसन्न थे। परमेश्वर ने जलप्रलय के माध्यम से पृथ्वी को नष्ट किया। फिर भी परमेश्वर ने नूह पर दया कि और उनके परिवार और हर प्रकार के कुछ जानवरों को बचाया।

उत्पत्ति 8:15–11:32

जलप्रलय के बाद, पृथ्वी नई जैसे हो गई । परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार के साथ पृथ्वी पर जीवन फिर से शुरू किया। उन्होंने इसे फिर से उन जीवजंतु के साथ शुरू किया जो जहाज पर थे। परमेश्वर ने नूह के परिवार और पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के साथ एक वाचा बाँधी थी। फिर भी जलप्रलय ने मानवजाति पर पाप के श्राप को नष्ट नहीं किया। बाबेल का शहर और मीनार इस बात के उदाहरण थे कि पाप किस तरह निरंतर रहा। लोगों ने मिलकर परमेश्वर के विरुद्ध कार्य किया। उन्होंने जो मीनार बनाई, उससे पता चलता है कि वे कितने घमंडी थे। वे पृथ्वी पर फैलने के बजाय बाबेल शहर में ही रहना चाहते थे।केवल जब वे एक ही भाषा नहीं बोल सकते थे तभी वे पूरी दुनिया में फैले। येपेत, शेम और हाम की वंशावली बताती हैं कि यह कैसे हुआ। इनके वंश विभिन्न वंशावलियों की शुरुआत के बारे मे बताते है। उत्पत्ति मे शेम के माध्यम से नूह की वंशावली का वर्णन किया है। परमेश्वर ने अपनी योजना के अनुसार मानवजाति को बचाने के लिए शेम की वंशावली को चुना। अब्राम शेम के परिवार का हिस्सा थे ।

उत्पत्ति 12:1–14:24

परमेश्वर ने अब्राम से एक प्रतिज्ञा किया। अब्राहम को मेसोपोटामिया में अपने पिता की भूमि और परिवार को छोड़ना था। उसे एक नई भूमि पर जाना था। परमेश्वर अब्राम के परिवार को एक बड़ी जाति बनाना चाहता था। इसका अर्थ यह था कि अब्राम के परिवार मे बहुत सी संताने और पोते-पोतियाँ होंगे। परमेश्वर अब्राम के कारण पृथ्वी पर सभी जातियों को आशीष देगा। और परमेश्वर अब्राम के परिवार को कनान देश में रहने के लिये दे देगा। उत्पत्ति की कहानियाँ दिखाती हैं कि परमेश्वर अब्राम से किए गए अपने प्रतिज्ञा को पूरा करने में कितना विश्वासयोग्य था। वे यह भी दिखाती हैं कि कभी-कभी अब्राम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था और कभी-कभी वह विश्वासयोग्य नहीं था। वह विश्वासयोग्य था जब वह सारा, लूत और उनकी सभी वस्तुओं के साथ कनान गया था। वह विश्वासयोग्य था जब उसने सदोम के राजा के द्वारा धनवान बनने से मना कर दिया था। उसे भरोसा था कि परमेश्वर उसकी आवश्यकता को पूरा करेगा। अब्राम विश्वासयोग्य नहीं था जब उसने फिरौन से सारै के बारे में झूठ बोला। उसने मिस्र में उसकी देखभाल करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया। तौभी परमेश्वर अब्राम के प्रति तब भी विश्वासयोग्य बना रहा जब अब्राम उसके प्रति विश्वासयोग्य नहीं था। परमेश्वर ने मिस्र में अब्राम और सारै की रक्षा की और उन्हें धन की आशीष दी। लूत के एक अलग क्षेत्र में जाने के उपरान्त परमेश्वर ने अब्राम से अपनी प्रतिज्ञाओं को दोहराया। परमेश्वर ने अब्राम को सफलता दी जब उसने लूत को उन राजाओं से बचाया जिन्होंने सदोम पर आक्रमण किया था। युद्ध के उपरान्त, मलिकिसिदक ने पहचान लिया कि परमेश्वर अब्राम की देखभाल कर रहा है। मलिकिसिदक ने अब्राम को परमेश्वर के नाम से आशीष दी।

उत्पत्ति 15:1–20:18

उत्पत्ति अध्याय 15 में परमेश्वर ने अब्राम को देश और एक बड़ा परिवार देने के अपने प्रतिज्ञाओं को दोहराया। उसने यह अब्राम के साथ एक वाचा बाँधकर किया। लेकिन सारै को अभी तक कोई संतान नहीं हुई थी। इसलिए अब्राम यह नहीं समझ पाया कि परमेश्वर उसके परिवार को एक बड़ी जाति कैसे बनाएगा। फिर भी, अब्राम ने उसे एक पुत्र देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। अब्राम के विश्वास ने परमेश्वर को प्रसन्न किया। अब्राम परमेश्वर में विश्वास करके परमेश्वर के साथ धर्मी ठहराया गया। इसे धर्मी बनाया जाना या धर्मी ठहराया जाना भी कहा जाता है। परमेश्वर ने जानवरों के बलिदान के द्वारा अब्राम के साथ अपनी वाचा को लागू किया। उत्पत्ति अध्याय 17 में, परमेश्वर ने अब्राम के साथ अपनी वाचा दोहराई। उसने अब्राम और सारै के नाम बदलकर अब्राहम और सारा रख दिए। उसने स्पष्ट किया कि अब्राहम के परिवार के साथ उसकी वाचा हमेशा के लिए बनी रहेगी। उस वाचा का चिन्ह खतना था। अब्राहम को पुत्र होने के परमेश्वर के वचन को पूरा होने में बहुत समय लगा। इस कारण से अब्राहम और सारा के लिए परमेश्वर पर पूर्ण रूप से भरोसा करना कठिन था। अब्राहम का सारा की दासी हाजिरा से जन्मा एक पुत्र था। अब्राहम ने गरार के राजा से अपनी पत्नी सारा के बारे में झूठ बोला। सारा हँसी और परमेश्वर के प्रतिज्ञा पर विश्वास नहीं किया कि उसको एक बच्चा होगा। परन्तु परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया था कि अब्राहम और सारा एक पुत्र के माता-पिता होंगे। उनसे मिलने वाले तीन पुरुषों ने कहा कि उनका पुत्र इसहाक एक वर्ष के भीतर जन्म लेगा। परमेश्वर इसहाक के द्वारा उस वाचा को बनाये रखा। भले ही अब्राहम और सारा ने उस पर पूर्ण रूप से भरोसा नहीं किया, फिर भी परमेश्वर ने उनकी रक्षा की। उसने उनके घनिष्ठ लोगों की भी

रक्षा की। उसने मरुभूमि में हाजिरा की रक्षा की और इश्माएल को आशीष देने की प्रतिज्ञा की। उसने लूत को भी बचाया जब सदोम और अमोरा नष्ट हो गए थे।

उत्पत्ति 21:1–22:24

अब्राहम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा और उसके नाम को पुकारता रहा। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को एक पुत्र देने के अपने प्रतिज्ञा को पूरा किया। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किया था कि वह इसहाक के द्वारा अब्राहम के साथ अपने वाचा को बनाये रखेगा। फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम से इसहाक की बलि देने को कहा। यह एक परीक्षा थी कि देखे कि क्या अब्राहम पूर्ण रूप से विश्वास करता है कि परमेश्वर उसके लिए प्रदान करेगा। अब्राहम आज्ञा मानने के लिए तप्तर था क्योंकि उसे विश्वास था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरी करेगा। यह इब्रानियों 11:19 में समझाया गया है। परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक की बलि देने से रोक दिया। उसने इसके बदले बलि के लिए एक मेढ़ा प्रदान किया। यह एक ऐसे बात का चित्र था जो सैकड़ों वर्ष बाद होगी। परमेश्वर ने यीशु को मनुष्यों को पाप से बचाने के लिए बलिदान के रूप में प्रदान किया। परमेश्वर बहुत प्रसन्न था कि अब्राहम ने उस पर पूर्ण रूप से भरोसा किया और उसकी आज्ञा मानने को तप्तर था। यह पुराने नियम में बच्चों की बलि चढ़ाने की प्रथा के समान नहीं था। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा की आशीषों को दोहराया।

उत्पत्ति 23:1–25:18

अब्राहम ने यह सुनिश्चित करने के लिए कई कार्य किये कि इसहाक को परमेश्वर की वाचा की आशीष मिले। जब इसहाक छोटा था, तब अब्राहम ने हाजिरा और उनके बेटे इश्माएल को दूर भेज दिया। जब इसहाक बड़ा हुआ, तब अब्राहम ने उन बेटों को भी दूर भेज दिया जो सारा की मृत्यु के बाद हुए थे। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि उसकी दूसरी पत्नियों से हुए संतान इसहाक के लिए समस्याएं न पैदा करें।अब्राहम ने यह निश्चित किया था कि इसहाक कनानी स्त्री से विवाह ना करे। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि रिबका से विवाह करने के बाद भी इसहाक कनान मे ही रहेगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार को कनान की भूमि देने का वादा किया था। अब्राहम के पास अभी तक वह भूमि नहीं थी। उसे पलिश्तियों के साथ उन कुओं को लेकर भी समस्याएं थीं जिन्हें उसने खोदा था। कनान में अब्राहम के पास केवल वह गुफा थी जहां सारा को दफनाया गया था।

उत्पत्ति 25:19–28:9

उत्पत्ति मे अब्राहम की वंशावली को इसहाक के द्वारा बताया गया है। परमेश्वर ने दुनिया को बचाने की अपनी योजना में इसहाक के परिवार की वंशावली के द्वारा काम करने के लिए चुना। लेकिन अब्राहम के परिवार के जन हमेशा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। इसहाक ने रिबका के बारे में झूठ बोला जैसे अब्राहम ने फिरौन से सारा के बारे में झूठ बोला था। फिर भी परमेश्वर अपनी वाचा मे विश्वासयोग्य रहा।परमेश्वर ने इसहाक को पलिश्तियों के बीच आशीर्वाद दिया। परमेश्वर ने इसहाक से उस वाचा को दोहराया जो उसने अब्राहम से की थी। परमेश्वर ने इसहाक को संतान कि आशीष दी और अपनी वाचा को याकूब के द्वारा पूरा करने का वादा किया। यह स्पष्ट था जब याकूब और एसाव का जन्म हुआ। एसाव ने परिवार में जेठे बेटे के अधिकार का सम्मान नहीं किया। रिबका और याकूब ने इसहाक को धोखा देकर याकूब को पिता का आशीर्वाद दिलवाया जो एसाव का था। इससे परिवार में फूट पैदा हो गईं। याकूब उस भूमि से भाग गया जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार की वंशावली को देने का वादा किया था। उसने अपनी जान बचाने के लिए ऐसा किया। फिर भी इसहाक ने याकूब के द्वारा अपनी वाचा को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया।

उत्पत्ति 28:10–31:55

उत्पत्ति में इसहाक के परिवार की कहानियाँ याकूब के माध्यम से जारी रहीं। परमेश्वर ने संसार को बचाने की अपनी योजना में याकूब की वंशावली के माध्यम से काम करने के लिए चुना। बेतेल में, परमेश्वर याकूब के स्वप्न में प्रकट हुए। परमेश्वर ने याकूब से वही वाचा बांधी जो उसने अब्राहम और इसहाक से की थी। परमेश्वर ने याकूब और उनकी संतानों को कनान की भूमि देने का वादा किया। उसने वादा किया कि याकूब की वंशावली के द्वारा पृथ्वी अशीषित होगी। याकूब की बाकी कहानियाँ परमेश्वर की उन वादों के प्रति विश्वासयोग्यता को बताती हैं जो उसने किए थे। वे यह भी बताती हैं कि याकूब को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा। लाबान ने याकूब को लिआ और राहेल दोनों से शादी करने के लिए धोखा दिया। याकूब के कई बच्चे उसकी पत्नियों और उपपत्नियों के द्वारा हुए। लेकिन उसके परिवार में बहुत लड़ाई और कम शांति थी। परमेश्वर ने याकूब को एक चरवाहे के रूप में उसके काम में सफलता की आशीष दी। लेकिन लाबान ने इन आशीषों के कारण उसका फायदा उठाया। जब वह कनान लौटना चाहता था, तो याकूब को खतरे का सामना करना पड़ा। लाबान से भागने से वह सुरक्षित नहीं रहा। परमेश्वर ने लाबान को उसे ठेस पहुँचाने से रोककर याकूब को सुरक्षित रखा। याकूब के परिवार मे कई समस्याएँ थीं और वे पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। वे एक-दूसरे के प्रति ईमानदार नहीं थे और वे झूठे देवताओं की पूजा करते रहे। लेकिन परमेश्वर उनके प्रति विश्वासयोग्य बना रहा।

उत्पत्ति 32:1–35:29

कनान कि भूमि पर लौटना याकूब के लिए एक खतरा था। उसे डर था कि एसाव उस पर और उसके परिवार पर हमला करेगा और उन्हें मार डालेगा। याकूब ने एसाव को भेंट भेजकर महिलाओं और बच्चों की रक्षा करने के लिए तैयारी किया। लेकिन यह परमेश्वर था जिसने याकूब और उसके परिवार की रक्षा की। याकूब ने उस पुरुष के साथ मल्लयुद्ध किया जिसने उन्हे परमेश्वर का आशीष दी। उस पुरुष ने याकूब का इस्राएल नाम रखा। भले ही याकूब ने इसहाक का आशीर्वाद चुरा लिया था, लेकिन एसाव बहुत अमीर हो गया था। उसे याकूब द्वारा भेजे गए भेंटो की आवश्यकता नहीं थी। एसाव ने याकूब को गले लगाकर स्वागत किया और उस पर हमला नहीं किया। उसने याकूब को माफ कर दिया था। बाद में याकूब और एसाव अपने पिता इसहाक को मिट्टी देने में सफल हुए। कनान में याकूब कि पहली भूमि शेकेम शहर के पास थी। याकूब के पुत्रों ने शेकेम के पुरुषों के विरुद्ध परमेश्वर के साथ अपने वाचा के चिन्ह का इस्तेमाल किया। उन्होंने खतना करके पुरुषों को धोखा दिया और फिर उन्हें मार डाला और शहर को लूट लिया। उन्होंने यह इसलिए किया क्योंकि हमोर के पुत्र शेकेम ने दीना के साथ गलत किया था। याकूब के परिवार को उस क्षेत्र से भागना पड़ा। उन्होंने अपने झूठे देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया और बेतेल चले गए। वहाँ याकूब ने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई। एक बार फिर परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया और उसे इस्राएल कहा। एक बार फिर परमेश्वर ने याकूब के साथ अपनी वाचा को बनाए रखने का वादा किया। याकूब के 12 पुत्रों की सूची बताती है कि इस्राएल के 12 गोत्र कहाँ से आए। इस्राएल में, याकूब के पुत्रों को कुलपिता के रूप में भी जाना जाता था।

उत्पत्ति 36:1–38:30

एसाव की वंशावली उत्पत्ति में दर्ज है। लेकिन अब्राहम और इसहाक के परिवार की कहानी याकूब के पुत्रों के माध्यम से बताई गई है। यह सबसे अधिक यूसुफ के माध्यम से बताई गई है। याकूब के बेटे जो लिया, बिल्हा और ज़िल्पा के साथ थे, यूसुफ से जलते थे क्योंकि उनके पिता यूसुफ को उनसे अधिक प्रेम करते थे। उन्होंने यूसुफ के खिलाफ बुरा किया। उन्होंने उसे दास के रूप में बेच दिया। यह यहूदा का विचार था। फिर याकूब के पुत्रों ने याकूब से कहा कि यूसुफ मारा गया है। याकूब सुनकर दुखी हुआ और उनसे आश्वासन लेने से इनकार कर दिया। इसके बाद, यहूदा याकूब और अन्य भाइयों से दूर चला गया। उसकी बहू तामार ने उसे धोखा दिया। उसने यह इसलिए किया क्योंकि यहूदा के पुत्रों ने अपने बहनोई के कर्तव्य को पूरा नहीं किया।

उत्पत्ति 39:1–41:57

जब यूसुफ कनान में नहीं था, तब भी परमेश्वर ने रक्षा की और उसे आशीर्वाद दिया। परमेश्वर ने कई वर्ष पहले याकूब के साथ भी ऐसा ही किया था।यूसुफ को पोतीपर के घर में प्रबंधक के रूप में सफलता मिली। पोतीपर वह मिस्री अधिकारी था जिसने यूसुफ को अपने गुलाम के रूप मे खरीदा था। यूसुफ को जेल में प्रबंधक के रूप में सफलता मिली। उन्हें यह समझने में सफलता मिली कि लोगों के सपनों का क्या मतलब है। उन्हें कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। उन्हें दास के रूप में काम करना पड़ा। कुछ भी गलत नहीं करने पर भी उसे जेल में डाल दिया गया। एक अधिकारी जो उसे जेल से मुक्त कराने में मदद कर सकता था, उसके बारे में भूल गया। उस समय परमेश्वर ने यूसुफ को यह समझने में सहायता की कि फिरौन के स्वप्नों का क्या अर्थ है। उसके बाद फिरौन ने यूसुफ को सारे मिस्र का शासक बना दिया। यूसुफ ने सुनिश्चित किया कि भयानक भूख के वर्षों के दौरान पर्याप्त भोजन हो।

उत्पत्ति 42:1–45:15

याकूब बिन्यामीन को भोजन खरीदने के लिए मिस्र नहीं भेजना चाहता था। उसे डर था कि वह उसे खो देगा जैसे उसने यूसुफ को खो दिया था। यूसुफ ने अपने दस भाइयों की परीक्षा ली, उन्हें बिन्यामीन को मिस्र लाने के लिए मजबूर किया। फिर उसने यह देखने के लिए उनकी परीक्षा ली कि क्या वे बिन्यामीन के साथ बुरा व्यवहार करेंगे। यूसुफ को गुलामी में बेचने के बाद से यहूदा बदल गया था। उसने यूसुफ के दास के रूप में रहने की पेशकश की ताकि बिन्यामीन मुक्त हो सके। फिर दस भाइयों को मालूम हुआ कि मिस्र का प्रधानमंत्री उनका भाई यूसुफ था। वे डर गए कि वह उनके साथ क्या करेगा। लेकिन यूसुफ ने उन्हें माफ कर दिया। यूसुफ ने बताया कि किस प्रकार परमेश्वर उनकी बुरी परिस्थति मे भी साथ था। जब यूसुफ जवान था तब उसका सपना सच हो गया। वह सपना उत्पत्ति 37:5–11 में दर्ज किया गया था। उसके भाइयों ने उसे प्रणाम किया। परन्तु भाई अब एक दूसरे से नफ़रत नहीं करते थे और न ही ईर्ष्या करते थे। इसके बजाय, वे रोये, गले मिले और एक साथ बातें कीं।

उत्पत्ति 45:16–50:26

कनान छोड़ने से पहले, याकूब ने बेर्शेबा में परमेश्वर की आराधना की। परमेश्वर ने उसे एक दर्शन दिया। परमेश्वर ने याकूब के परिवार को कनान की भूमि में वापस लाने का वादा किया। अब्राहम की वंशावली संख्या मे बहुत बड़ गई थी। यूसुफ ने अपने अधिकार का इस्तेमाल करके याकूब के परिवार के लिए भूमि प्रदान किया। वे गोशेन में अपने चरवाहे का कार्य करते रहे। यूसुफ ने अपने अधिकार का इस्तेमाल मिस्रियों और दूसरे देशों के लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए भी किया। जिस तरह से उसने यह किया, उससे फिरौन और अधिक धनी और शक्तिशाली हो गया। जो बाद में अब्राहम की वंशावली के लिए समस्याएं पैदा कर सकता था। परमेश्वर ने उत्पत्ति 15:13 में अब्राहम को इन समस्याओं

उत्पत्ति *45:16–50:26*

के बारे में चेतावनी दी थी। याकूब ने यूसुफ के पुत्र एप्रैम और मनश्शे को अपने पुत्रों के रूप में अपनाया। अपने बेटों को पिता का आशीर्वाद देने के बाद, याकूब की मृत्यु हो गई। याकूब की मृत्यु के बाद उसके भाइयों को डर था कि यूसुफ उन्हें दंड देगा। लेकिन यूसुफ ने अपने भाइयों को पूरी तरह से माफ कर दिया था। हालांकि उसने बहुत कष्ट सहे थे, और परमेश्वर ने उसके माध्यम से कई जीवन बचाए थे। याकूब और यूसुफ दोनों के लिए कनान में दफनाया जाना बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने अब्राहम के परिवार को कनान की भूमि देने के परमेश्वर के वादे पर भरोसा किया।